हिन्दी व्याकरण एवं रचना

पाठ्यपुस्तक सहित

हिन्दी व्याकरण

पाठ–1

संज्ञा

1. जो शब्द किसी व्यक्ति, पशु, वस्तु, स्थान या भाव के नाम का बोध कराते हैं, उन्हें संज्ञा कहते हैं। उदाहरण–राम, गाय, किताब, मेरठ, सुदंरता आदि।
संज्ञा के तीन भेद हैं–
(i). व्यक्तिवाचक संज्ञा **(ii).** जातिवाचक संज्ञा **(iii).** भाववाचक संज्ञा।

2. जो शब्द किसी विशेष व्यक्ति, पशु, वस्तु या स्थान के नाम का बोध कराते हैं, वे शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

3. जो शब्द किसी धातु, द्रव्य, पदार्थ आदि का बोध कराते हैं, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।

4. (क) सारा तेल बिखर गया। (द्रव्यवाचक संज्ञा)
(ख) बुढ़ापा बहुत बुरा होता है। (भाववाचक संज्ञा)
(ग) श्रीमान वर्मा हमारे पड़ोसी हैं।(व्यक्तिवाचक संज्ञा), (जातिवाचक संज्ञा)
(घ) बाहर बहुत भीड़ हैं। (समुदायवाचक संज्ञा)
(ड़) माली पौधों को पानी दे रहा है। (जातिवाचक संज्ञा), (जातिवाचक संज्ञा), (द्रव्यवाचक संज्ञा)

5. (क) हाँ (ख) हाँ (ग) नही (घ) नही

6. **भाववाचक संज्ञाएँ–** सुंदरता, अपनापन, शत्रुता, बचपन, ऊँचाई, बुढ़ापा

पाठ–2

लिंग

1. शब्द का वह रूप जो स्त्री जाति या पुरूष जाति का बोध कराए, उसे लिंग कहते हैं। उदाहरण– 1. सेठ, सेठानी, शेर, शेरनी, आदि।

2. लिंग दो प्रकार के होते हैं– (i). पुल्लिंग (ii). स्त्रीलिंग।
पुल्लिंग–जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, वे पुल्लिंग कहलाते हैं। जैसे– सेठ, नौकर, गधा आदि।
स्त्रीलिंग–जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, वे स्त्रीलिंग कहलाते हैं। जैसे– सेठानी, नौकरानी, गधी आदि।

3. वीर– वीरांगना, बालक– बालिका

4. (क) सम्राज्ञी (ख) शिष्या (ग) आचार्या (घ) बिल्ली (ड़) पुजारिन (च) कवयित्री

5. (क) मालिन पौधे को पानी दे रही है। (ख) नौकर झाड़ू लगा रहा है। (ग) पिता सोफे पर बैठे हैं।
(घ) बैल घास चरता है। (ड़) वह बहुत गुणवान है।

6. पुल्लिंग–पुत्र, घोड़ा, शेर, नौकर, पंडित, राजा।
स्त्रीलिंग–माता, पड़ोसिन, गाय, मोरनी, देवरानी, चाची, लड़की।

7. (क) पुल्लिंग (ख) स्त्रीलिंग (ग) पुल्लिंग (घ) पुल्लिंग (ड़) स्त्रीलिंग (च) पुल्लिंग
(छ) स्त्रीलिंग

पाठ–3

वचन

1. संज्ञा या सर्वनाम शब्द का वह रूप, जो उसकी सख्या का बोध कराए, वचन कहलाता है। उदाहरण– (i).लड़का (एक) (ii). लड़के (एक से अधिक)

2. वचन दो प्रकार के होते हैं– (i). एकवचन (ii).बहुवचन।
एकवचन–शब्द का वह रूप जो उसके एक होने का बोध कराए, उसे एकवचन कहते हैं, जैसे– गुब्बारा, स्त्री, कपड़ा आदि।

बहुवचन—शब्द का वह रूप जो उसके एक से अधिक होने का बोध कराए, उसे बहुवचन कहते हैं, जैसे– गुब्बारे, स्त्रियाँ, कपड़े आदि।

3. (क) छाते (ख) लड़के (ग) सेनाएँ (घ) काँटे (ड़) दीवारें (च) चिड़ियाँ

4. (क) राम के पास अनेक भेड़ हैं। (ख) मदन की बहनें उससे छोटी हैं। (ग) मेरी आँखो में दर्द हो रहा हैं।
(घ) चिड़ियाँ चहक रही हैं। (ड़) मीना ने मालाएँ बनाई।

5. किताब, कॉपी, रूपया, कथा, रोटी, गेंद, बल्ला, ग्वाला, गोपी।

6. (क) पहाड़ियाँ (ख) कारखाने (ग) नदियाँ (घ) कपड़े (ड़) झाड़ियाँ (च) नौकाएँ
(छ) घाटियाँ (ज) चमड़े

7. (क) देशो (ख) आवासो (ग) बुद्धो (घ) रातो (ड़) गाँवो (च) सैनिको
(छ) लोगो (ज) मित्रो

पाठ–4

कारक

1. संज्ञा या सर्वनाम का जो रूप वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ उसके संबंध का बोध कराता है, उसे कारक कहते हैं।

2. वाक्य में शब्दों के आपसी संबंध को प्रकट करने वाले उपर्युक्त चिह्न विभक्ति–चिह्न या कारक–चिह्न कहलाते हैं।

3. कारक के आठ प्रकार हैं–
1. कर्ता **2.** कर्म **3.** करण **4.** संप्रदान **5.** अपादान **6.** संबंध **7.** अधिकरण
8. संबोधन

4. (क) (ii) (ख) (iv) (ग) (vi) (घ) (viii) (ड़) (iii) (च) (i)
(छ) (v) (ज) (vii)

5. (क) नही (ख) नही (ग) हाँ

पाठ–5

सर्वनाम

1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। उदाहरण– वह, उसका, वे, हमारे आदि।

2. सर्वनाम के दो रूप होते हैं–
(i). एकवचन– मैं, तुम, वह, यह, इसे, उसे।
(ii).बहुवचन– हम, तुम, सब, वे, ये, इन्हें, उन्हें।

3. सर्वनाम के छह भेद होते हैं–
(i). पुरूषवाचक **(ii).** निश्चयवाचक **(iii).** अनिश्चयवाचक **(iv).** प्रश्नवाचक **(v).** संबधवाचक
(vi). निजवाचक

4. जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग बोलने वाला (वक्ता) अपने लिए, सुनने वाले के लिए (श्रोता) या अन्य व्यक्ति के लिए करता है, वे पुरूषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं ; जैसे– मैं, तुम, वह, आदि।
पुरूषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं–
1. **उत्तम पुरूष–** बोलने वाला (वक्ता) अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, वे उत्तम पुरूषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं ; जैसे– मैं, मैंने, हम, हमनें आदि।
2. **मध्यम पुरूष–** बोलने वाला (वक्ता) सुनने वाले (श्रोता) के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, वे मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं ; जैसे– तू, तुम, तुम्हारा, आप, आपका आदि।
3. **अन्य पुरूष–** बोलने वाला (वक्ता) या सुनने वाला (श्रोता) किसी अन्य व्यक्ति के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, वे अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं ; जैसे– वह, वे, उसे, उन्हें आदि।

5. (क) यह मेरा घर हैं। निश्चयवाचक सर्वनाम
(ख) वे हमारे मित्र हैं। पुरूषवाचक (अन्य पुरूष)
(ग) तुम क्या गाना चाहते हो? पुरूषवाचक (मध्यम पुरूष), प्रश्नवाचक
(घ) विश्व का सबसे बड़ा देश कौन–सा है? प्रश्नवाचक
(ड़) तुम इसे स्वयं करो। पुरूषवाचक (मध्यम पुरूष), निजवाचक

6. (क) मैं राजा हूँ। (ख) तुम गाना बहुत अच्छा गाती हो। (ग) वह जिसकी मित्र है मै भी उसकी मित्र हूँ।
(घ) तुम इस काम को स्वयं करो। (ड़) वे सब घर आने वाले है।

पाठ–6

विशेषण

1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता या गुण बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं; जैसे–लाल गुलाब, छः सेब आदि।
विशेषण के चार भेद होते हैं–
(i). गुणवाचक विशेषण **(ii).** संख्यावाचक विशेषण **(iii).** परिमाणवाचक विशेषण **(iv).** सार्वनामिक विशेषण

2. संज्ञा शब्दों की संख्या या क्रम बताने वाले शब्द संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–राम के पास चार गेंदें और एक बल्ला है।

3. संज्ञा शब्दों की संख्या या क्रम बताने वाले शब्द संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–राम के पास चार गेंदें और एक बल्ला है।
संज्ञा शब्दों की माप–तौल का बोध कराने वाले शब्दों को परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–पिता जी दो किलो आलू, एक–एक किलो टमाटर व प्याज लाए।

4. संज्ञा से पहले लगकर उसकी विशेषता का बोध कराने वाले शब्द सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–यह पुस्तक, मेरा पेन आदि।
विशेषण के चार भेद होते हैं–

5.

6.

विशेषण	भेद	
(क) कुछ	संख्यावाचक	(अनिश्चित)
(ख) दो लीटर	परिमाणवाचक	(निश्चित)
(ग) स्वादिष्ट	गुणवाचक	
(घ) प्रथम	संख्यावाचक	(निश्चित)
(ड़) यह, रोचक	सार्वनामिक, गुणवाचक	

7. (क) बड़ा (ख) सस्ता (ग) हरा–भरा (घ) मधुर (ड़) अच्छा (च) शानदार

पाठ–7

क्रिया

1. जो शब्द किसी काम के करने या होने का बोध कराते हैं, उन्हें क्रिया शब्द कहते हैं ; जैसे–गाना, रोना, हँसना आदि।
क्रिया दो प्रकार की होती हैं–
(i). सकर्मक क्रिया **(ii).** अकर्मक क्रिया

2. **सकर्मक क्रिया–** सकर्मक अर्थात् कर्म के साथ।
इन वाक्यों में क्रिया के साथ 'क्या', 'किसे' प्रश्न करने पर जो उत्तर मिलता है, वह कर्म कहलाता है; जैसे–राजन ढोल बजा रहा है।
राजन क्या बजा रहा है? उत्तर–ढोल
अकर्मक क्रिया– सकर्मक अर्थात् कर्म के बिना।
इन वाक्यों में क्रिया के साथ 'क्या', 'किसे' प्रश्न करने पर उत्तर नही मिलता, जैसे–बच्चा रो रहा है।
बच्चा क्या रो रहा है। उत्तर–✕
अर्थात जिस क्रिया में कर्म नहीं पाया जाता है, वह अकर्मक क्रिया कहलाती है।

3. (क) जाती (ख) पढ़ता (ग) रहता (घ) जाता

4. (क) गिरते (ख) गा (ग) सुन (घ) बना (ड़) लाए

5. (क) आज मैने खाना पकाया।
(ख) नीता अच्छा नाचती है।
(ग) सभी ने खाना खा लिया है।
(घ) आज हमे बाहर खेलना हैं।

पाठ–8

काल

1. क्रिया का जो रूप उसके होने के समय का बोध कराता है, उसे काल कहते हैं; जैसे– अध्यापिका व्याकरण पढ़ा रही थीं। (बीते हुए समय में), अध्यापिका व्याकरण पढ़ा रही हैं। (चल रहे समय में), अध्यापिका व्याकरण पढ़ाएँगी (आने वाले समय में)

2. काल के तीन भेद होते हैं–

(i). भूतकाल– क्रिया का जो रूप उसके बीते हुए समय में होने का बोध कराता है, उसे भूतकाल कहते हैं; जैसे–नेहा चित्र बना रही थी।

(ii). वर्तमान काल– क्रिया का जो रूप उसके वर्तमान समय में होने का बोध कराता है, उसे वर्तमान काल कहते हैं; जैसे–बच्चे फुटबॉल खेल रहे हैं।

(iii). भविष्यत् काल– क्रिया का जो रूप उसके आने वाले समय में होने का बोध कराता है, उसे भविष्यत् काल कहते हैं; जैसे–अजय कल पतंग उड़ाएगा।

3. (क) **भूतकाल–**क्रिया का जो रूप उसके बीते हुए समय में होने का बोध कराता है, उसे भूतकाल कहते हैं।
(ख) **वर्तमान काल**– क्रिया का जो रूप उसके वर्तमान समय में होने का बोध कराता है, उसे वर्तमान काल कहते हैं।
(ग) **भविष्यत् काल**– क्रिया का जो रूप उसके आने वाले समय में होने का बोध कराता है, उसे भविष्यत् काल कहते हैं।

4. (क) भूतकाल (ख) भूतकाल (ग) भविष्यत् काल (घ) वर्तमान काल

5. **भूतकाल**
(क) माताजी कल बाजार गयी थी। (ख) मै कल बहुत रो रही थी।
वर्तमान काल
(क) आज मेरी परिक्षा हैं। (ख) रिया नृत्य कर रही है।
भविष्यत् काल
(क) कल हम नानी के जाएगें। (ख) कल हम वृंदावन जाएगें।

पाठ–9

उपसर्ग और प्रत्यय

1. जो शब्दांश किसी शब्द के पहले लगकर उसका अर्थ बदल देते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं; जैसे– उप+हार = उपहार

2. **(i).** अ + सत्य = असत्य, **(ii).** अप + मान = अपमान, **(iii).** अन् + अंत = अनंत,
(iv). आ + जन्म = आजन्म, **(v).** उप + देश = उपदेश

3. जो शब्दांश किसी शब्द के बाद में जुड़कर उसका अर्थ बदल देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे– फल+वाला = फलवाला

4. **(i).** सफल + ता = सफलता **(ii).** सरल + ता = सरलता, **(iii).** सुख + ई = सुखी,
(iv). धन + ई = धनी

5. (क) अनादर (ख) सहित (ग) अवशेष (घ) नासमझ (ड़) विजय (च) सम्मान
(छ) प्रदीप (ज) प्रदेश (झ) प्रतिदिन (ञ) दुर्जन (ट) पराजय (ठ) कुपुत्र

6.

	उपसर्ग	मूल शब्द
(क)	अ	सत्य
(ख)	स	हित
(ग)	आ	जन्म
(घ)	वि	ज्ञान
(ड़)	उप	देश
(च)	सं	गति
(छ)	ना	लायक
(ज)	पर	लोक
(झ)	दुर	दशा
(ञ)	अन	पढ़

7. (क) निपुणता (ख) चौकीदार (ग) दयालु (घ) बुराई (ड़) सातवाँ (च) नम्रता
(छ) सफलता (ज) पत्रकार (झ) धार्मिक (ञ) चढ़ाई (ट) रंगत (ठ) भारतीय

8.

मूल शब्द	प्रत्यय
(क) सरल	ता
(ख) धन	ई
(ग) नमक	ईन
(घ) घबरा	आहट
(ड़) रंग	ईन
(च) लेख	क
(छ) पाठ	क
(ज) बूढ़ा	पा
(झ) रंग	त
(ञ) शर्म	इला

पाठ–10

पर्यायवाची तथा विलोम शब्द

1. समान अर्थ देने वाले शब्द समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं; जैसे– गाय–गौ, धेनु, सुरभि आदि।

2. समानार्थी शब्द

3. एक–दूसरे का विपरीत अर्थ देने वाले शब्द विपरीतार्थक या विलोम शब्द कहलाते हैं; उदय–अस्त, आंरभ–अंत आदि।

4. विपरीतार्थक शब्द

5. (क) सरिता, तटिनी, तरंगिणी (ख) मिथ्या, असत्य, अनृत (ग) नृप, भूप, भूपति (घ) वृक्ष, तरू, विटप
(ड़) बेटी, सुता, तनुजा

6. (क) हमें देर रात्रि तक घूमना नही चाहिए।
(ख) देवनदी एक पवित्र नदी है।
(ग) बच्चे बगीचे मे खेल रहे है।
(घ) शिवम प्रातः जल्दी जागता है।

7. (क) व्यय (ख) दुखद (ग) दोष (घ) नीचे (ड़) चढ़ाव (च) ठंडा (छ) अंत (ज) विराग

8. (क) राजन विद्वान है।
(ख) यह गाँव सूखे से ग्रस्त है।
(ग) आपका क्या प्रश्न है?
(घ) नरक मे दानव रहते है।
(ड़) राकेश ने नई कार खरीदी।

पाठ–11

मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ

1. वाक्यों में जब हम कुछ ऐसे वाक्यांशों का प्रयोग करते हैं, जो अपना सामान्य अर्थ न देकर पूरे वाक्य को एक विशेष अर्थ देते हैं, ऐसे वाक्यांशों को ही मुहावरे कहते हैं; जैसे–कान भरना, लट्टू होना आदि।

2. जो कहावत लोगों के अनुभवों के आधार पर बनती हैं और बातचीत के समय प्रयोग की जाती हैं, उन्हें लोकोक्ति कहते हैं; जैसे–एक पंथ, दो काज।

3. जो वाक्यांश सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ देते हैं, उन्हें मुहावरे कहते हैं।
संसार में प्रचलित वे कथन (कहावतें) जो सामान्य जनजीवन के अनुभवों पर आधारित हैं, उन्हें लोकोक्ति कहते हैं।

4. (क) **अँगूठा दिखाना**–साफ इंकार कर देना।
लोग अपना काम निकल जाने के बाद अँगूठा दिखा देते हैं।
(ख) **हाथ मलना**–पछताना
हमें समय की कद्र करनी चाहिए क्योंकि बाद में हाथ मलने से कुछ नहीं होता।
(ग) **गाँठ बाँधना**–बात याद रखना।
मेहनत करने से ही सफलता मिलती हैं, यह बात हमें गाँठ बाँध लेनी चाहिए।
(घ) **अगर–मगर करना**–टाल–मटोल करना।
पिताजी ने राम से बाजार चलने के लिए कहा तो वह अगर–मगर करने लगा।
(ड़) **बाल–बाल बचना**–कठिनाई से जान बचना।
आज तो श्याम बस दुर्घटना में बाल–बाल बचा है।
(च) **आँखें खुलना**–सच्चाई का पता लगना।
घर में दूध देने आने वाले भैया को जब मैंने दूध में पानी मिलाते देखा तो मेरी आँखे खुल गई।

(छ) पहाड़ टूट पड़ना–भारी विपत्ति आना।
उसकी सारी दौलत चोरो ने लुट ली तो उस पर पहाड़ टूट पड़ा।
(ज) लोहा लेना–मुकाबला करना।
देश के प्रधानमंत्री ने कोविड–19 को देश से हटाने का लोहा लिया है।

5. **(क) चिराग तले अँधेरा**–ज्ञानी के घर में मूर्खता का आचरण होना।
श्रंजना के पिता अंग्रेजी के अध्यापक हैं, परंतु उसे अंग्रेजी नहीं आती। यह तो वही बात हुई–चिराग तले अँधेरा
(ख) एक अनार सौ बीमार–एक वस्तु, अनेक इच्छुक
आजकल बेरोजगारी इतनी है कि एक नौकरी के लिए दर्जनों उम्मीदवार हैं। यह तो वही बात हुई कि एक अनार सौ बीमार।
(ग) काला अक्षर भैंस बराबर–अनपढ़ होना।
उसने बचपन से कभी पढ़ाई नही की आज उसके लिए सब काला अक्षर भैंस बराबर है।
(घ) थोथा चना बाजे घना–सार कम, दिखावा अधिक
रमेश नृत्य क्या सीखने लगा हर समय अपने नृत्य की तारीफ करता रहता है। इसे कहते हैं–थोथा चना बाजे घना।
(ड़) दूर के ढोल सुहावने–दूर से सब कुछ अच्छा लगता है।
सभी लोग दूसरों की उन्नति से इर्ष्या करते हैं परतुं उनकी मेहनत की ओर कोई ध्यान नहीं देता। ठीक ही है, दूर के ढोल सुहावने होते हैं।
(च) एक पथं दो काज–एक साधन से दो काम बन जाना।
मै शिमला में ट्रेनिंग के लिए जाऊँगा और साथ ही मामा–मामी से मिल आऊँगा।
(छ) ऊँची दुकान फीका पकवान–दिखावा ज्यादा लेकिन गुण कम होना।
उस कंपनी का सामान बिल्कुल अच्छा नहीं है, बस ऊंची दुकान फीके पकवान।

रचना

पाठ–1

पत्र–लेखन

(क) सेवा में,
प्रधानाचार्य जी

विषय–पुनः प्रवेश के लिए प्रार्थना–पत्र।
मान्यवर, निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा पाँच 'क' का छात्र था। मेरे पिताजी के स्थानांतरण होने के कारण मुझे उनके साथ मिर्जापुर जाना पड़ा, वहाँ पढ़ाई का कोई उचित प्रबंध नहीं है, इसीलिए में आपके विद्यालय में पुनः प्रवेश लेना चाहता हूँ।
मैं अपनी कक्षा में मेधावी छात्रों में रहा हूँ। मैंने अनेक सांस्कृतिक तथा खेलकूद प्रतियोगिताओं में पुरस्कार भी प्राप्त किए हैं। अब भी मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि पुनः प्रवेश मिलने पर मैं उसी लगन से कार्य करूँगा तथा विद्यालय का सम्मान बढ़ाने की हर संभव कोशिश करूँगा।
सधन्यवाद
आपका आज्ञाकारी शिष्य

(ख) सेवा में,
आदरणीय प्रधानाचार्य जी
(विद्यालय)

विषय: देरी से आने के लिए क्षमा प्रार्थना–पत्र।
श्रीमान जी,
आज मैं विद्यालय में देरी से पहुँचा जब मैं पहुँचा तो हमारी कक्षाएँ आरंभ हो चुकी थी परंतु मैं भी विवश था क्योंकि जब मैं आ रहा था तो रास्ते में मैंने एक दुर्घटना देखी उस दुर्घटना में एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया था और कोई भी उसको अस्पताल ले जाने के लिए तैयार नहीं था मैंने हिम्मत करके उसको अपने स्कूटर पर बिठाया और फिर उसको अस्पताल छोड़कर ही विद्यालय आ पाया।
देरी से आने के लिए आपसे क्षमा प्रार्थना करता हूँ। आशा है आप मुझे क्षमा कर देंगे।
आपका आज्ञाकारी शिष्य

(ग) प्रिय मित्र (मित्र का नाम),
सप्रेम नमस्कार!

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि आज तुम्हारा जन्मदिन है। इस विशेष अवसर पर मैं तुम्हें दिल से जन्मदिन की ढेर सारी शुभकामनाएँ देता हूँ। ईश्वर करे कि तुम्हारा जीवन खुशियों से भरा रहे और तुम्हारी सभी इच्छाएँ पूरी हों।
तुम्हारी दोस्ती मेरे लिए बहुत खास है। तुम्हारे साथ बिताए गए पल मेरी यादों में हमेशा बसे रहेंगे। तुमने हमेशा मुझे सहारा दिया है और मेरी हर परिस्थिति में मेरा साथ दिया है। तुम्हारी सच्ची मित्रता का मैं सदा आभारी रहूँगा।
मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हें जीवन में सफलता, समृद्धि और अपार खुशियाँ मिलें। इस खास दिन को खूब धूमधाम से मनाओ और आनंद लो। जल्द ही हम मिलकर तुम्हारे जन्मदिन का जश्न मनाएँगे।
एक बार फिर से जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ!
तुम्हारा मित्र
आपका नाम,

(घ) प्रिय मित्र (रमन),
सप्रेम नमस्कार!
मैं आशा करता हूँ कि तुम स्वस्थ और प्रसन्न होंगे। मैं तुम्हें एक अत्यंत शुभ अवसर का निमंत्रण देने के लिए यह पत्र लिख रहा हूँ। बड़े हर्ष के साथ मैं तुम्हें सूचित करना चाहता हूँ कि मेरी बहन की शादी 1-3-XXXX को होने जा रही है। यह हमारे परिवार के लिए बहुत ही खास और खुशी का अवसर है, और इस शुभ अवसर पर तुम्हारी उपस्थिति हमारे लिए अनमोल होगी।
शादी का कार्यक्रम अ. ब. स, में आयोजित किया जा रहा है। पूरी शादी की तैयारियाँ जोर–शोर से चल रही हैं, और परिवार में खुशी का माहौल है। तुम्हारे बिना यह खुशी अधूरी रहेगी, इसलिए तुम्हें जरूर आना है।
कृपया अपना आगमन सुनिश्चित करें और इस शुभ अवसर को और भी यादगार बनाने में हमारा साथ दें। तुम्हारे आने का बेसब्री से इंतजार रहेगा।
तुम्हारा मित्र
रोहित

(ङ) प्रिय चाचा जी,
सादर प्रणाम!
आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ और प्रसन्न होंगे। मुझे जन्मदिन पर आपकी भेजी हुई सुंदर घड़ी प्राप्त हुई। इसे देखकर मैं बहुत खुश हुआ। यह घड़ी न केवल देखने में आकर्षक है, बल्कि मेरे लिए बहुत उपयोगी भी है। आपने मेरे जन्मदिन को और भी विशेष बना दिया।
आपका यह स्नेह और आशीर्वाद मेरे लिए अनमोल है। मैं आपकी दी हुई इस घड़ी को हमेशा संभालकर रखूँगा और समय की महत्वता को समझते हुए इसका सही उपयोग करूंगा।
आपका यह स्नेहपूर्ण उपहार पाकर मेरा हृदय प्रसन्नता से भर गया है। आपका बहुत–बहुत धन्यवाद! कृपया आशीर्वाद बनाए रखें। घर पर सभी को मेरा स्नेह भरा प्रणाम कहें।
आपका स्नेही,

(च) प्रेषक:
आपका नाम,
आपका पता,
आपका शहर,
दिनांक,
सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी
नगर निगम कार्यालय
शहर का नाम,
विषय: कालोनी की सफाई व्यवस्था सुधारने हेतु अनुरोध
महोदय,
नम्रतापूर्वक आपका ध्यान हमारी कालोनी की सफाई व्यवस्था की ओर आकर्षित करना चाहता/चाहती हूँ। हमारे क्षेत्र (कालोनी का नाम), में पिछले कुछ समय से सफाई व्यवस्था में भारी लापरवाही देखी जा रही है। गली–मोहल्लों में कचरे के ढेर लगे हुए हैं, और नियमित सफाई न होने के कारण गंदगी बढ़ती जा रही है। इससे ना केवल बदबू फैल रही है, बल्कि मच्छर, मक्खियों और अन्य कीटाणुओं के कारण संक्रामक बीमारियों का खतरा भी बढ़ गया है।
अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि कृपया जल्द से जल्द सफाई कर्मियों को भेजकर क्षेत्र की सफाई करवाई जाए और कूड़ा उठाने की प्रक्रिया को नियमित किया जाए। इसके अतिरिक्त, कूड़ेदानों की उचित व्यवस्था की जाए ताकि लोग सड़क पर कचरा फेंकने से बचें।
हम आशा करते हैं कि आप इस गंभीर समस्या का शीघ्र समाधान करेंगे और हमारे क्षेत्र को स्वच्छ बनाए रखने में सहयोग करेंगे। आपकी सहायता के लिए हम सदा आभारी रहेंगे।

धन्यवाद।
सादर,
आपका नाम,
आपका संपर्क नंबर,
आपका पता,

पाठ–2

संवाद–लेखन

(क) डॉक्टर और रोगी के बीच संवाद

रोगी : नमस्ते डॉक्टर साहब!
डॉक्टर : नमस्ते! बताइए, आपको क्या समस्या हो रही है?
रोगी : डॉक्टर साहब, मुझे पिछले दो–तीन दिनों से बुखार हो रहा है और पूरे शरीर में दर्द भी है।
डॉक्टर : क्या आपको सर्दी–खांसी भी हो रही है?
रोगी : हाँ डॉक्टर, हल्की खांसी है और गले में खराश भी महसूस हो रही है।
डॉक्टर : ठीक है, मैं आपका तापमान और ब्लड प्रेशर चेक कर लेता हूँ। (तापमान मापते हुए) आपका बुखार 101° F है।
रोगी : जी डॉक्टर, मुझे कमजोरी भी बहुत लग रही है।
डॉक्टर : हो सकता है कि यह वायरल संक्रमण हो। मैं कुछ दवाइयाँ लिख देता हूँ, जिन्हें आपको समय पर लेना होगा।
रोगी : ठीक है डॉक्टर, क्या मुझे कोई परहेज भी रखना होगा?
डॉक्टर : हाँ, आपको हल्का और पौष्टिक भोजन करना चाहिए, ज्यादा पानी पीना चाहिए और पूरी तरह आराम करना चाहिए। ठंडी चीजों से बचें और गरम पानी का सेवन करें।
रोगी : ठीक है डॉक्टर साहब, मैं आपकी सलाह का पालन करूँगा।
डॉक्टर : बहुत अच्छा! अगर बुखार तीन दिनों में कम न हो या कोई और परेशानी हो, तो तुरंत मुझसे संपर्क करें।
रोगी : जी धन्यवाद, डॉक्टर साहब!

(ख) पुत्र और पिता के बीच जन्मदिन उपहार पर संवाद

पुत्र : पापा, मेरा जन्मदिन आने वाला है!
पिता : हाँ बेटा, मुझे पता है। तुम बहुत उत्साहित लग रहे हो!
पुत्र : हाँ पापा! इस बार मैं एक खास उपहार चाहता हूँ।
पिता : अच्छा! बताओ, तुम्हें क्या चाहिए?
पुत्र : मुझे एक नई साइकिल चाहिए, ताकि मैं अपने दोस्तों के साथ घूमने जा सकूँ।
पिता : बेटा, साइकिल तो बहुत अच्छी चीज है, लेकिन क्या तुम उसकी अच्छी देखभाल कर पाओगे?
पुत्र : हाँ पापा! मैं रोज उसे साफ रखूँगा और सही तरीके से चलाऊँगा।
पिता : ठीक है, अगर तुम वादा करते हो कि अपनी पढ़ाई के साथ–साथ जिम्मेदारी भी निभाओगे, तो मैं तुम्हें साइकिल दिला दूँगा।
पुत्र : पक्का पापा! मैं पढ़ाई में मन लगाऊँगा और साइकिल का भी ध्यान रखूँगा।
पिता : बहुत अच्छे बेटे! तुम्हारे जन्मदिन पर तुम्हें एक प्यारी साइकिल मिलेगी।
पुत्र : धन्यवाद पापा! आप सबसे अच्छे हैं!
(पिता प्यार से पुत्र को गले लगा लेते हैं)

(ग) नए विद्यालय में पहले दिन दो बच्चों के बीच संवाद कुछ इस प्रकार हो सकता है :

अमित : (मुस्कुराते हुए) नमस्ते! मेरा नाम अमित है। मैं इस स्कूल में नया हूँ। तुम्हारा नाम क्या है?
रवि : नमस्ते! मेरा नाम रवि है। मैं भी इस स्कूल में नया आया हूँ। तुम कौन सी कक्षा में हो?
अमित : मैं आठवीं कक्षा में हूँ। तुम किस कक्षा में हो?
रवि : मैं भी आठवीं कक्षा में हूँ! लगता है हम एक ही कक्षा में हैं।
अमित : यह सुनकर अच्छा लगा! तुम्हें कौन–कौन से विषय पसंद हैं?
रवि : मुझे गणित और विज्ञान बहुत पसंद हैं। तुम्हें क्या पसंद है?
अमित : मुझे भी विज्ञान बहुत पसंद है, लेकिन हिंदी मेरा सबसे पसंदीदा विषय है।
रवि : बहुत अच्छा! क्या तुमने पहले ही स्कूल का पूरा दौरा कर लिया है?

अमित : नहीं, अभी नहीं। मैंने सिर्फ अपनी कक्षा देखी है।
रवि : चलो, साथ में स्कूल का दौरा करते हैं और बाकी जगहें देखते हैं।
अमित : हाँ, यह बहुत अच्छा रहेगा। चलो चलते हैं!
(दोनों खुशी–खुशी स्कूल के दूसरे हिस्सों को देखने के लिए निकल पड़ते हैं।)

(घ) पिता और पुत्र के बीच कबड्डी मैच पर संवाद :

पुत्र : पापा, आज हमारे स्कूल में कबड्डी मैच था, और हमारी टीम ने जीत हासिल की!
पिता : अरे वाह! बहुत बढ़िया बेटा! मुझे बताओ, मैच कैसा रहा?
पुत्र : पापा, मैच बहुत रोमांचक था। शुरुआत में हमारी टीम पिछड़ रही थी, लेकिन फिर हमने शानदार वापसी की।
पिता : बहुत अच्छा! तुमने किस पोजीशन पर खेला?
पुत्र : मैं रेडर था, और मैंने तीन बार सफलतापूर्वक रेड की। एक बार तो मैं चार डिफेंडरों को छूकर वापस आ गया!
पिता : कमाल कर दिया बेटा! कबड्डी में ताकत के साथ–साथ चतुराई भी बहुत जरूरी होती है।
पुत्र : हां पापा, हमारे कोच सर ने यही सिखाया था कि सिर्फ ताकत से नहीं, बल्कि तेज सोच और रणनीति से खेलना चाहिए।
पिता : बिल्कुल सही! यही खेल भावना होती है। और डिफेंडिंग में तुम्हारी टीम कैसी रही?
पुत्र : हमारी डिफेंस बहुत मजबूत थी, खासकर हमारे कप्तान ने कई अच्छे टैकल किए। अंतिम क्षणों में उन्होंने विपक्षी टीम के सबसे अच्छे रेडर को आउट कर दिया।
पिता : बहुत अच्छा! यह टीम वर्क का खेल है, और सभी को मिलकर खेलना चाहिए।
पुत्र : हां पापा, हम सबने मिलकर खेला और इसलिए जीत हमारी हुई।
पिता : मुझे तुम पर गर्व है बेटा! खेल को सिर्फ जीतने के लिए नहीं, बल्कि उसे पूरे मन से खेलने के लिए अपनाओ। इससे तुम्हारा आत्मविश्वास भी बढ़ेगा और फिटनेस भी बनी रहेगी।
पुत्र : बिल्कुल पापा! अगली बार मैं आपको भी हमारा मैच देखने के लिए आमंत्रित करूंगा।
पिता : जरूर बेटा, मैं जरूर आऊंगा! हमेशा मेहनत करो और खेल भावना बनाए रखो।
पुत्र : धन्यवाद पापा! मैं और अच्छा खेलने की कोशिश करूंगा।
(संवाद समाप्त)

पाठ–3

सार्थक शब्द

1. (क) आज हम बाजार जा रहे है। (ख) कल मेरा जन्मदिन है। (ग) पिताजी आज हमे मेला दिखाने ले जा रहे है।
(घ) नानी ने आज मुझे कहानी सुनाई।

2. (क) प+उ+स्+त्+अ+क्+आ+ल्+य+अ
(ख) द्+आ+द्+आ+ज्+ई
(ग) क्+इ+स्+आ+न्+अ
(घ) त्+इ+त्+अ+ल्+ई

3. (क) किताब (ख) चिंता (ग) नाक (घ) महल (ड़) बदरी (च) दरी

4. (क) मेरे दोस्त के घर आज मेहमान आ रहे है।
(ख) तुम्हारा नाम क्या है?
(ग) मेरे मामाजी कानपूर में रहते है।
(घ) मेज पर किताब रखी है।

5. (क) रवि औजार का प्रयोग कर रहा है।
(ख) बच्चे खेल रहे हैं।
(ग) कृष्ण अर्जुन के सारथी बने थे।
(घ) राजा जनक की बेटी सीता थी।

6. (क) हमें रोज पानी पीना चाहिए।
(ख) विज्ञान से देश मे उन्नति होती है।
(ग) हवाई जहाज से मुझे डर लगता है।
(घ) हमारे यहाँ की नदी बहुत साफ है।

7. (क) दीपावली मुझे बहुत अच्छा त्योहार लगता हैं।
(ख) अध्यापिका ने मुझसे प्रश्न पुछा।
(ग) मुझे खेलना अच्छा लगता है।
(घ) मम्मी ने भोजन बनाया है।

पाठ–4

कहानी–लेखन

1. (क) उपकार का बदला

उपकार का बदला चुकाने के लिए आभार व्यक्त करना और अवसर मिलने पर सहायता करना नैतिकता और इंसानियत की निशानी होती है। जब कोई व्यक्ति हमारी मदद करता है, तो हमें भी उसके प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए और जहाँ संभव हो, उसकी सहायता करनी चाहिए।

कहानी :

एक बार की बात है, एक किसान अपने खेतों की ओर जा रहा था। रास्ते में उसने देखा कि एक घायल सांप ठंड से ठिठुर रहा है। किसान को उस पर दया आ गई और उसने सांप को अपनी चादर में लपेट लिया और घर ले जाकर उसका उपचार किया। कुछ दिनों बाद सांप ठीक हो गया और किसान के पास लौटकर बोला, "तुमने मेरी जान बचाई, मैं तुम्हारा एहसान कभी नहीं भूलूँगा।"

कुछ समय बाद, एक दिन किसान सो रहा था, तभी उसने देखा कि एक जहरीला बिच्छू उसके पैरों की ओर बढ़ रहा है। अचानक वही सांप आया और बिच्छू को मारकर किसान की जान बचा ली। किसान यह देखकर हैरान रह गया और उसने सोचा, "सच ही कहते हैं कि उपकार का बदला उपकार से ही दिया जाता है।"

शिक्षा :

1. उपकार करने से हमें किसी इनाम की उम्मीद नहीं करनी चाहिए, लेकिन अच्छाई कभी व्यर्थ नहीं जाती।
2. यदि हम किसी की मदद करते हैं, तो किसी न किसी रूप में हमें उसका फल अवश्य मिलता है।
3. इंसान को हमेशा दूसरों की भलाई के लिए तत्पर रहना चाहिए, क्योंकि उपकार का बदला उपकार से ही मिलता है।

"जो दूसरों की भलाई करता है, उसे जीवन में हमेशा सुख और सम्मान मिलता है।"

(ख) अकल बड़ी या भैंस

एक गाँव में दो दोस्त रहते थे – रामू और श्यामू। दोनों चरवाहे थे और खेतों में काम करते थे। श्यामू सीधा–सादा था और शारीरिक रूप से बलवान था, जबकि रामू चतुर और बुद्धिमान था।

एक दिन दोनों में बहस हो गई कि "अकल बड़ी होती है या भैंस?"

श्यामू ने कहा, "भैंस बड़ी होती है, क्योंकि वह दूध देती है, ताकतवर होती है और खेतों में काम आती है।"

रामू ने कहा, "नहीं, अकल बड़ी होती है, क्योंकि बिना अकल के कोई भी अपने जीवन को सही तरीके से नहीं चला सकता।"

बहस बढ़ गई, तो गाँव के मुखिया ने कहा कि इसका फैसला करने के लिए दोनों को एक परीक्षा देनी होगी।

परीक्षा का दिन

गाँव के मुखिया ने दोनों को एक मुश्किल रास्ते से गुजरकर गाँव के दूसरे छोर पर पहुँचने के लिए कहा। रास्ते में एक गहरी खाई थी।

श्यामू ने बिना सोचे–समझे अपनी भैंस पर बैठकर खाई पार करने की कोशिश की, लेकिन भैंस रुक गई और आगे नहीं बढ़ी। श्यामू वहीं फँस गया।

वहीं, रामू ने अपनी अकल लगाई। उसने लकड़ी और रस्सियों से एक पुल बनाया और आराम से खाई पार कर गया।

जब मुखिया ने देखा कि रामू अपनी अकल से मुश्किल हल कर चुका है, तो उसने फैसला सुनाया –

"अकल बड़ी होती है, क्योंकि बिना अकल के ताकत भी बेकार है!"

श्यामू को भी यह बात समझ आ गई और उसने आगे से अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करने का निश्चय किया।

शिक्षा :

शारीरिक ताकत महत्वपूर्ण होती है, लेकिन बुद्धिमानी उससे भी बड़ी होती है। इसलिए जीवन में अकल का इस्तेमाल करना जरूरी है।

(ग) राजा का न्याय

प्राचीन समय की बात है। एक राज्य में राजा विक्रम सिंह का शासन था। वे बहुत ही न्यायप्रिय और प्रजा के हितैषी थे। उनके राज्य में सभी सुख–शांति से रहते थे, क्योंकि राजा का न्याय सबके लिए समान था।

एक दिन, राज्य के एक व्यापारी रामलाल ने दरबार में आकर गुहार लगाई, "महाराज! मेरे साथ बहुत बड़ा अन्याय हुआ है। मेरा सारा धन मेरे ही पड़ोसी श्यामू ने चुरा लिया है। कृपया मुझे न्याय दिलाइए।"

राजा ने तुरंत सैनिकों को आदेश दिया कि श्यामू को दरबार में हाजिर किया जाए। जब श्यामू आया, तो उसने स्वयं को निर्दोष बताया और कहा, "महाराज! मैंने कुछ नहीं चुराया। यह मुझ पर झूठा आरोप लगा रहा है।"

राजा विक्रम सिंह दोनों की बातें ध्यान से सुन रहे थे। वे जानते थे कि सत्य की परीक्षा लिए बिना न्याय करना उचित नहीं होगा। उन्होंने दोनों को ध्यान से देखा और फिर सोच–समझकर कहा, "हम इस मामले की गहराई से जाँच करेंगे। सत्य सामने लाना आवश्यक है।"

राजा ने अपने गुप्तचरों को आदेश दिया कि वे इस मामले की जाँच करें। कुछ दिनों बाद गुप्तचर लौटे और उन्होंने राजा को सूचित किया कि चोरी वास्तव में श्यामू ने की थी। राजा ने तुरंत श्यामू को बुलाकर कहा, "तुमने अपने मित्र के साथ विश्वासघात किया है। तुम्हें इसकी सजा अवश्य मिलेगी।"

राजा ने श्यामू को उचित दंड दिया और व्यापारी रामलाल को उसका धन लौटा दिया। न्याय देखकर राज्य की प्रजा अत्यंत प्रसन्न हुई और राजा विक्रम सिंह की न्यायप्रियता की प्रशंसा करने लगी।

शिक्षा : सत्य और न्याय की विजय हमेशा होती है। हमें कभी भी झूठ और चोरी का सहारा नहीं लेना चाहिए।

(घ) बालक की सूझ–बूझ

एक गाँव में एक गरीब किसान का बेटा रामु रहता था। वह बहुत ही चतुर और समझदार बालक था। उसकी सूझ–बूझ के कारण गाँव के लोग उसे बहुत पसंद करते थे।

एक दिन गाँव के बाहर एक व्यापारी का बैल खो गया। वह बहुत परेशान था और गाँव के लोगों से मदद माँगने लगा। किसी को भी बैल का पता नहीं था, लेकिन रामु ने ध्यान से व्यापारी की बातें सुनीं और बैल की खोज में निकल पड़ा।

रामु ने रास्ते में बैल के पैरों के निशान देखे और यह अंदाजा लगाया कि बैल किस दिशा में गया होगा। वह निशानों का पीछा करते हुए जंगल की ओर बढ़ा और थोड़ी दूरी पर देखा कि बैल एक गड्ढे में फँसा हुआ था।

रामु ने तुरंत गाँव जाकर लोगों को बुलाया और सभी की मदद से बैल को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। व्यापारी बहुत खुश हुआ और रामु की सूझ–बूझ की खूब तारीफ की। उसने इनाम में रामु को कुछ पैसे और मिठाई दी।

इस घटना से गाँव के लोग और भी ज्यादा रामु की बुद्धिमानी पर विश्वास करने लगे। रामु की सूझ–बूझ और समझदारी ने यह साबित कर दिया कि छोटी उम्र में भी अक्ल और चतुराई से बड़ी से बड़ी समस्या हल की जा सकती है।

शिक्षा :हमें हर समस्या का समाधान धैर्य और सूझ–बूझ से निकालना चाहिए।

2. (क) दो बिल्लियाँ और बंदर

एक गाँव मे दो बिल्लियाँ रहती थी। वे आपस मे मेल से रहती थी। जो कुछ मिलता उसे बाट कर खाती थी। पर एक दिन वे दोनों बहुत भूखी थीं। वे खाने की तलाश में इधर–उधर घूम रही थीं। अचानक, उन्हें एक रोटी का टुकड़ा मिला। दोनों बिल्लियाँ बहुत खुश हुईं और रोटी लेने के लिए झगड़ने लगीं।

पहली बिल्ली बोली, "यह रोटी मेरी है, क्योंकि मैंने इसे पहले देखा!"

दूसरी बिल्ली बोली, "नहीं! यह मेरी है, क्योंकि मैंने इसे पहले उठाया!"

वे दोनों आपस में झगड़ती रहीं, लेकिन कोई हल नहीं निकला। तभी उन्हें एक चालाक बंदर दिखाई दिया।

बंदर ने उनकी बातें सुनीं और उसने कहा "तुम दोनों चिंता मत करो, मैं न्याय करूंगा और रोटी को बराबर–बराबर बाँट दूँगा।" बंदर जा कर एक तराजू ले कर आया। फिर उसने रोटी को दो हिस्सों में तोड़ा। फिर उसने दोनों टुकड़ों को तौला और जानबूझकर एक टुकड़ा बड़ा और दूसरा छोटा कर दिया।

वह बोला, "अरे! यह टुकड़ा बड़ा है, इसे थोड़ा छोटा कर देता हूँ।" और उसने बड़े टुकड़े को थोड़ा खा लिया। अब दूसरा टुकड़ा बड़ा लगने लगा।

बंदर ने फिर से कहा, "अरे! यह दूसरा टुकड़ा बड़ा हो गया, इसे भी थोड़ा छोटा कर देता हूँ।" और उसने उसे भी खा लिया। जो टुकड़ा भारी होता वो उसे खा जाता।

ऐसे ही वह धीरे–धीरे दोनों टुकड़े खाता गया और अंत में पूरी रोटी खा गया। दोनों बिल्लियाँ बंदर का मुह देखती रह गईं और रोने लगीं।

शिक्षा :

आपसी झगड़े का फायदा हमेशा दूसरों को मिलता है। इसलिए हमें आपस में लड़ने के बजाय मिल–जुलकर रहना चाहिए।

(ख) शिकारी और कबूतरों की कहानी

एक समय की बात है, एक जंगल में एक शिकारी रहता था। वह प्रतिदिन पक्षियों को पकड़ने के लिए जाल बिछाया करता था। एक दिन उसने कबूतरों को पकड़ने के लिए जाल बिछाया और उसमें कुछ चावल बिखेर दिए ओर झाडी मे छिप गया।

कुछ ही समय बाद, कबूतरों का एक झुंड वहाँ आया। उन्होंने जमीन पर चावल देखे और उन्हें खाने के लिए उतर पड़े। लेकिन जैसे ही उन्होंने चावल खाना शुरू किया, वे सभी शिकारी के जाल में फँस गए।

अब सभी कबूतर बहुत घबरा गए और सोचने लगे कि कैसे इस जाल से बाहर निकला जाए। तभी उनके राजा, एक समझदार और बुद्धिमान कबूतर ने कहा, "अगर हम सब मिलकर एक साथ उड़ने की कोशिश करें, तो हम इस जाल को भी अपने साथ ले जा सकते हैं और सुरक्षित स्थान पर पहुँचकर इसे काट सकते हैं।"
सभी कबूतरों ने अपने राजा की बात मानी और एक साथ जोर लगाकर उड़ने लगे। देखते ही देखते वे शिकारी के सामने ही जाल सहित उड़ गए। शिकारी यह देखकर दंग रह गया और उनका पीछा करने लगा, लेकिन कुछ ही देर में कबूतर उसकी नजरों से ओझल हो गए।
थोड़ी दूर उड़ने के बाद कबूतरों का झुंड अपने मित्र चूहे के पास पहुँचा। कबूतरों के राजा ने चूहे से कहा, "मित्र, कृपया अपने तेज दाँतों से इस जाल को काट दो ताकि हम सब आजाद हो सकें।"
चूहे ने तुरंत अपने नुकीले दाँतों से जाल को काटना शुरू किया और थोड़ी ही देर में सभी कबूतर आजाद हो गए। उन्होंने अपने मित्र चूहे का धन्यवाद किया और खुशी–खुशी उड़ गए।
शिक्षा :
"एकता में शक्ति होती है।"
अगर हम मिलकर कोई भी काम करें, तो बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान किया जा सकता है।

पाठ–5

निबंध–लेखन

(क) मेरा प्रिय त्योहार दीपावली है। यह हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण त्योहार है, जिसे पूरे भारत में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

दीपावली का महत्व

दीपावली का अर्थ है 'दीपों की पंक्ति'। यह त्योहार अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने, बुराई पर अच्छाई की जीत और नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर अग्रसर होने का प्रतीक है। इस दिन भगवान श्रीराम माता सीता और भाई लक्ष्मण के साथ 14 वर्षों के वनवास के बाद अयोध्या लौटे थे। उनके स्वागत में अयोध्यावासियों ने दीप जलाए और नगर को रोशनी से भर दिया। तभी से यह त्योहार मनाया जाता है।

दीपावली मनाने की विधि

1. सफाई और सजावट – घरों की साफ–सफाई कर उन्हें रंगोली, दीयों और झालरों से सजाया जाता है।
2. पूजा–पाठ–इस दिन विशेष रूप से माँ लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा की जाती है ताकि घर में सुख–समृद्धि बनी रहे।
3. मिष्ठान व आतिशबाजी–इस अवसर पर तरह–तरह के पकवान बनाए जाते हैं और लोग मिठाइयाँ बाँटते हैं। बच्चे पटाखे और फुलझड़ियाँ जलाकर आनंद लेते हैं।
4. उपहार और शुभकामनाएँ–रिश्तेदारों और मित्रों को उपहार व शुभकामनाएँ दी जाती हैं।

दीपावली का संदेश

दीपावली केवल रोशनी और उत्सव का पर्व ही नहीं, बल्कि यह हमें सिखाती है कि हमें अपने जीवन से अज्ञानता, अहंकार और बुरी आदतों को दूर कर ज्ञान, विनम्रता और सद्गुणों को अपनाना चाहिए। यह त्योहार प्रेम, सद्भाव और एकता का प्रतीक भी है।
यही कारण है कि दीपावली मेरा सबसे प्रिय त्योहार है। यह न केवल खुशियों का पर्व है बल्कि हमें जीवन में प्रकाश और सकारात्मकता लाने की प्रेरणा भी देता है।

(ख) **मेरा प्रिय मित्र**

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, और जीवन में मित्रता का बहुत महत्त्व होता है। मित्रता वह संबंध है जो विश्वास, स्नेह और पारस्परिक समझ पर आधारित होता है। मेरे भी कई मित्र हैं, लेकिन मेरा प्रिय मित्र (मित्र का नाम), है। वह मेरा सबसे अच्छा दोस्त है क्योंकि उसकी सोच, व्यवहार और आदतें मुझे बहुत प्रभावित करती हैं।

मेरे मित्र का परिचय

मेरा प्रिय मित्र (मित्र का नाम), एक बहुत ही नेकदिल, ईमानदार और मेहनती व्यक्ति है। वह हमेशा दूसरों की मदद करने के लिए तैयार रहता है। उसकी मुस्कान और विनम्र स्वभाव उसे औरों से अलग बनाते हैं। वह पढ़ाई में भी बहुत होशियार है और हमेशा अच्छे अंक प्राप्त करता है।

हमारी मित्रता की विशेषताएँ

हम दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते हैं और बहुत अच्छे दोस्त हैं। हम साथ में खेलते हैं, पढ़ाई करते हैं और एक–दूसरे की परेशानियों को हल करने की कोशिश करते हैं। जब भी मुझे कोई समस्या होती है, मेरा मित्र मेरी मदद के लिए तुरंत तैयार रहता है। उसकी यही विशेषता मुझे सबसे ज्यादा पसंद है।

मेरा मित्र क्यों प्रिय है?

मेरा प्रिय मित्र सच्चा और ईमानदार है। वह कभी झूठ नहीं बोलता और हमेशा सही रास्ते पर चलने की प्रेरणा देता है। उसके विचार सकारात्मक होते हैं और वह हर परिस्थिति में धैर्य बनाए रखता है। वह कठिन परिश्रम करने में विश्वास रखता है और दूसरों को भी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

निष्कर्ष

मित्रता जीवन का सबसे अनमोल उपहार है, और एक सच्चा मित्र जीवनभर साथ निभाता है। मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि मुझे (मित्र का नाम), जैसा अच्छा मित्र मिला है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारी मित्रता जीवनभर बनी रहे और हम हमेशा एक–दूसरे का साथ निभाएँ।

(ग) मेरा विद्यालय

विद्यालय वह स्थान है जहाँ हम शिक्षा प्राप्त करते हैं और जीवन के महत्वपूर्ण मूल्यों को सीखते हैं। मेरा विद्यालय एक आदर्श विद्यालय है, जहाँ शिक्षा के साथ–साथ अनुशासन और नैतिकता पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है।

विद्यालय का नाम और स्थान

मेरे विद्यालय का नाम (यहाँ विद्यालय का नाम लिखे) है। यह (यहाँ स्थान का नाम लिखें), में स्थित है। विद्यालय का भवन बहुत बड़ा और सुंदर है। यहाँ हरे–भरे पेड़ और बगीचे हैं, जो वातावरण को शांतिपूर्ण बनाते हैं।

विद्यालय की सुविधाएँ

मेरे विद्यालय में सभी आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ विशाल कक्षाएँ, एक बड़ी लाइब्रेरी, विज्ञान प्रयोगशालाएँ, कंप्यूटर लैब, खेल का मैदान और सभागार है। विद्यालय में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाता है।

शिक्षक और विद्यार्थी

मेरे विद्यालय के शिक्षक बहुत विद्वान, अनुभवी और सहायक हैं। वे हमें केवल पाठ्यपुस्तकों का ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि अच्छे संस्कार और नैतिक मूल्यों की शिक्षा भी देते हैं। हमारे विद्यालय के विद्यार्थी भी अनुशासित और परिश्रमी हैं।

विद्यालय में पढ़ाई और अन्य गतिविधियाँ

मेरे विद्यालय में पढ़ाई के साथ–साथ खेलकूद, संगीत, नाटक और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों पर भी ध्यान दिया जाता है। यहाँ हर वर्ष विज्ञान प्रदर्शनी, वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता और अन्य समारोह आयोजित किए जाते हैं।

निष्कर्ष

मुझे अपने विद्यालय पर बहुत गर्व है। यह न केवल शिक्षा का केंद्र है, बल्कि यह हमें एक अच्छा नागरिक बनने की प्रेरणा भी देता है। मैं अपने विद्यालय से बहुत प्रेम करता हूँ और इसका नाम रोशन करना चाहता हूँ।

"विद्यालय केवल ज्ञान का मंदिर नहीं, बल्कि जीवन का मार्गदर्शक भी होता है"

(घ) शिष्टाचार का अर्थ होता है सभ्यता, आदर और विनम्रता के साथ दूसरों के प्रति व्यवहार करना। यह हमारे सामाजिक और व्यावहारिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है, जिससे हम दूसरों के साथ अच्छे संबंध बना सकते हैं।

शिष्टाचार के प्रमुख प्रकार :

1. व्यक्तिगत शिष्टाचार–जैसे विनम्रता, धैर्य, नम्रता, और दूसरों के प्रति सम्मान।
2. सामाजिक शिष्टाचार–जैसे अभिवादन करना, सही भाषा का प्रयोग करना, सार्वजनिक स्थानों पर सभ्य व्यवहार करना।
3. आधिकारिक/कार्यस्थल शिष्टाचार– जैसे सहयोगियों से अच्छे संबंध रखना, समय का पालन करना, प्रोफेशनल व्यवहार बनाए रखना।
4. भोजन शिष्टाचार– जैसे खाने से पहले और बाद में धन्यवाद कहना, दूसरों का सम्मान करते हुए भोजन करना।
5. संचार शिष्टाचार– जैसे बातचीत में दूसरों की बातें ध्यान से सुनना, मर्यादित भाषा का प्रयोग करना, मोबाइल या ईमेल का उचित प्रयोग करना।

शिष्टाचार के लाभ :

- यह व्यक्ति को सम्माननीय बनाता है।
- सामाजिक संबंधों को मजबूत करता है।
- कार्यस्थल पर प्रभावी संचार और सहयोग बढ़ाता है।
- सकारात्मक और सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने में मदद करता है।

शिष्टाचार न केवल समाज में हमारी छवि को निखारता है, बल्कि यह हमारी संस्कृति और संस्कारों को भी दर्शाता है।

सड़क सुरक्षा एवं परिवेशीय सजगता

1. हमें सड़क के फुटपाथ पर चलना चाहिए।

2. पैदल सड़क पार करते समय हमें पहले बाई ओर देखना चाहिए कि कोइ वाहन तो नहीं आ रहा है उसके बाद दाई तरफ देखना चाहिए तथा फिर बाई तरफ देखकर सड़क पार करनी चाहिए।

3. ट्रैफिक लाइट में पीली, लाल तथा हरी रंग की तीन बत्तियाँ होती हैं। पीली बत्ती लाल बत्ती के होने का संकेत देती है। लाल बत्ती होने पर वाहन रोकना पड़ता है। हरी बत्ती चालक को आगे बढ़ने का संकेत देती है।

4. सड़क पर बनी सफेद और काली धारी वाली पट्टियों को 'जेब्रा क्रॉसिंग' कहते हैं। इसके ऊपर से पैदल यात्री सड़क पार करते हैं।

5. 'सड़क की भाषा' से आशय यातायात के नियमों का ज्ञान होने से है। सड़क पर अनेक संकेतक चिह्न बने होते हैं। हमें उनके बारे में जानकारी होनी चाहिए, तभी हम सुरक्षित यात्रा कर सकते हैं।

6. सीट बेल्ट दुर्घटना की स्थिति में वाहन चालक एवं सवारी को आगे की टक्कर होने से रोकती है। यह वाहन चालक व सवार सभी व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण है।

7. 101 या 112

8. 108

9. 100 या 112

10. हमें पुलिस और एंबुलेंस को सूचना देनी चाहिए तथा घायलों की प्राथमिक चिकित्सा करानी चाहिए।

11. इंजन न बंद करने से ईंधन की खपत बढ़ती है तथा वायु प्रदूषण भी होता है।

12. आगे की गाड़ी व अपनी गाड़ी के बीच एक गाड़ी की दूरी रखनी चाहिए।

13. गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन पर बातें करने से चालक का ध्यान बातों की ओर चला जाता है। फलतः वाहन से नियंत्रण हटते ही दुर्घटना हो जाती है। अतः वाहन चलाते समय मोबाइल पर बातें नहीं करनी चाहिए।

14. सामने की गाड़ी को ओवरटेक दायीं ओर से करना चाहिए।

15. मुझे अपने दादाजी और विषय अध्यापक महोदय से यह जानकारी मिली कि सड़क चिह्न पूरी दुनिया में एक जैसे होते हैं। इनके द्वारा मुझे यह भी ज्ञात हुआ कि विभिन्न देशों में अलग–अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। ये भाषाएँ प्रायः वाहन चालकों को समझ में नहीं आतीं। दूसरे शब्दों में सड़क के नियमों को समझने में भाषाई विभिन्नता रुकावट बन जाती है। इसी कारण सड़क के नियमों को संकेत रूप में समझाने के लिए पूरे विश्व में सड़क चिह्न एक जैसे होते हैं।

16. किसी वृद्ध व्यक्ति के बिमार होने की सूचना जैसे ही हमें प्राप्त होगी, हम अपना सब काम छोड़कर सबसे पहले उनके घर जायेंगे। उनकी हालत देखकर उनको डॉक्टर को दिखाने के लिए तुरन्त किसी भी उपलब्ध साधन से ले जायेंगे और उनका इलाज करवाने में पूरा सहयोग सभी प्रकार से करेंगे।

17. पैदल यात्रा परिपथ को जेब्रा क्रासिंग इसलिए कहते हैं क्योंकि सड़क पर जिस जगह यह क्रासिंग होती है वहाँ वैसी ही क्षैतिज धारीदार पट्टियाँ बनी होती हैं जैसे जेब्रा पशु के शरीर पर बनी होती हैं। इस प्रकार जेब्रा क्रासिंग से आशय धारीदार पट्टियों से होता हैं।

18. उपाय –
1. सड़क संकेतक लगाए जाएँ जिनमें गति सीमा दर्शायी गयी हो ।
2. स्कूल, कालेज, अस्पताल, राजकीय कार्यालयों के पास स्पीड ब्रेकर लगे हों ।
3. ट्रैफिक पुलिस द्वारा निगरानी रखी जाए।
4. नागरिकों को सड़क सुरक्षा के विषय में पूर्ण जानकारी हो ।
5. राजमार्गों और एक्सप्रेस वे पर गति सीमा के लिए विशेष निर्देश हों ।

दुर्घटना से बचने के लिए ऐसा करना आवश्यक है ।

19.
1. सड़क को खेल के मैदान के रूप में प्रयोग नहीं करना चाहिए।
2. बच्चों को न तो सड़क पर दौड़ना चाहिए और न ही दौड़ने की होड़ करनी चाहिए।
3. आवश्यकता होने पर यदि सड़क पर मुड़ना हो तो मुड़ने की दिशा में अपने हाथ द्वारा संकेत करना चाहिए।
4. सड़क पर सदैव बायीं ओर से चलना चाहिए।

20. मेरी दृष्टि में घर से विद्यालय एवं विद्यालय से घर पहुँचने के सुरक्षित रास्ते की योजना निम्नलिखित हो सकती है–
1. सड़क पर सदैव बायीं ओर से चलना चाहिए।
2. वाहनों से सदैव एक निश्चित दूरी बनाए रखनी चाहिए।
3. पीछे से यदि कोई वाहन आ रहा हो तो फुटपाथ पर होकर चलना चाहिए।
4. सड़क के संकेत चिह्नों एवं संकेतों के बारे में जानकारी रखकर उनका सावधानीपूर्वक पालन करना चाहिए।
5. पैदल होने पर सड़क को जेब्रा क्रासिंग से ही पार करना चाहिए।

21. विद्यालय जाते समय और घर वापिस आते समय सड़क के जिन चिह्नों को देखते हैं उनमें से कुछ के अर्थ निम्न हैं– **(i)** आगे मोड़ है। **(ii)** प्रवेश निषेध। **(iii)** हॉर्न प्रतिबंधित। **(iv)** आगे विद्यालय हैं। **(v)** पैदल यात्रा प्रतिबंधित है

(vi) गति अवरोधक। **(vii)** गति सीमा। **(viii)** यू–टर्न निषेध **(ix)** ओवरटेक निषेध।

22. हमें यातायात के निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिए–

1. हमें सदैव सड़क पर बायीं ओर से ही चलना चाहिए।
2. पैदल चलने की दशा में सड़क हमेशा जेब्रा क्रासिंग से ही पार करनी चाहिए।
3. सड़क संकेतों एवं चिह्नों को देखकर उनके द्वारा दिए गए सांकेतिक निर्देशों का सावधानीपूर्वक पालन करना चाहिए।
4. दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट अवश्य लगाना चाहिए।
5. चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट अवश्य बाँधनी चाहिए।
6. वाहनों को निश्चित किए गए स्थान पर ही पार्क (खड़ा) करना चाहिए।

23. सड़क पार करते समय हमें सर्वप्रथम दाएँ–बाएँ यह देखना चाहिए कि कहीं कोई वाहन तो नहीं आ रहा है। इसके बाद सड़क के विभिन्न संकेत चिह्नों को देखकर सावधानीपूर्वक सड़क पार करनी चाहिए। पैदल होने पर जेब्रा क्रासिंग से ही सड़क पार करनी चाहिए।

24. कॉलोनी में कुछ लोग जगह–जगह कचरा एवं गन्दगी फैलाते रहते हैं। इससे न केवल पूरी कॉलोनी गन्दी नजर आती है बल्कि अनेक प्रकार की बीमारियाँ भी फैलती हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी पूरे देश में स्वच्छ भारत अभियान चला रहे हैं। हम अपनी कॉलोनी के लोगों को समझायेंगे कि सभी लोग अपने घरों से निकलने वाले कूड़े–कचरे को इधर–उधर न डालकर कूड़ेदान में व एक नियत स्थान पर ही डालें, जिससे पूरी कॉलोनी साफ–सुथरी नजर आये और हम स्वच्छ भारत अभियान में अपना योगदान दे सकें।

25. 1. जब हम पैदल हों तो ध्यानपूर्वक चलना चाहिए। सामने से आ रहे यातायात पर नजर रखनी चाहिए। जहाँ ड्राइवर नहीं देख पाए वहाँ सड़क पार करने से बचना चाहिए।

2. डिवाइडर अथवा रेलिंग्स के ऊपर से कभी नहीं कूदना चाहिए।
3. यदि हम साइकिल से यात्रा कर रहे हों तो साइकिल पर क्षमता से अधिक भार नहीं लादना चाहिए। यदि सड़क पर साइकिल मार्ग हो तो केवल उसका ही उपयोग करना चाहिए अथवा हमेशा बायीं ओर से चलना चाहिए।
4. सड़क पर मुड़ते समय यातायात पर दृष्टि डालनी चाहिए एवं हाथ से मुड़ने वाली दिशा में संकेत करना चाहिए।
5. यदि हम बस से विद्यालय जा रहे हों तो शरीर का कोई भी अंग खिड़की आदि से बाहर नहीं निकालना चाहिए, शोरगुल कदापि नहीं करना चाहिए। इससे चालक का ध्यान बँटता है। अतः दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है।